।। अर्हम् ।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति,श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाष : 01565–224600,224900
ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

जीवन एक यात्रा है – आचार्य महाप्रज्ञ

–तुलसीराम चौरड़िया (मीडिया संयोजक)–

श्रीडूँगरगढ़ 23 जनवरी : अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि जीवन एक यात्रा है। स्थूल जगत में यात्रा कभी कभी करते हैं, पर सूक्ष्म जगत में देखें तो हमारी यात्रा निरंतर चल रही हैं श्वास, रक्त और ह्रदय प्रत्येक क्षण गति करते हैं। यह यात्रा प्राकृतिक है। जब जानबूझ कर यात्रा की जाती है तो उसका कोई लक्ष्य होता है, उद्देश्य होता है। हमारी भी यात्राएं होती हैं। पर हम यात्रा क्यों करें यह प्रश्न हो सकता है। इसका समाधान भगवान महावीर ने बहुत सुन्दर दिया है। भगवान ने ''तिन्नाणं तारयाणं'' अर्थात अपना कल्याण करो और साथ में दूसरों का भी कल्याण करों का सूत्र दिया। सबको इस बात पर ध्यान देना जरुरी है कि केवल दूसरों का ही कल्याण करेंगे तो यह धोका होगा। खुद में कुछ नहीं है और दूसरों को देने में निकल जायेंगे तो क्या मिलेगा ? वहां सिर्फ शून्यता ही रहेगी। उन्होनें कहा कि सबसे महत्वपूर्ण बात है स्वयं में अहिंसा, मैत्री, करुणा और व्रतों की साधना हो । जब ऐसी साधना होगी तब लोग अपने आप चले आयेंगे शांति पाने के लिए। साधना से जो प्राप्त किया है उसको लोगों में बांटना चाहिए। इस बात को नजर अंदाज करने पर कमी रह जाती है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि हिन्दूस्तान धार्मिक देश है। यहां भ्रष्टाचार का नाम भी नहीं होना चाहिए। परन्तु आज भ्रष्टाचार की सूचि में अग्रिम पंक्ति के देशों में नाम आता है। देश का बीमारी से कायाकल्प हो गया है। जहां दूध कभी बिकता नहीं था वहीं आज नकली दूध बिकने लग गया है। जहां इतनी अप्रामाणिकता, अनैतिकता रहती है उस समाज, ग्राम, नगर, देश को धार्मिक कहने में क्या संकोच नही होता ? आचार्य महाप्रज्ञ धर्म के तीन रुप बताते हुए कहा कि नैतिकता, उपासना और अध्यात्म यह धर्म के तीन अंग है। वर्तामान में ध र्म की जो स्थिति है वह पंख विहीन तड़पते हुए पक्षी की तरह है। आज केवल उपासना, पूजा–पाठ ही धर्म मान लिया गया है। नैतिकता और अध्यात्म इन दोनों पंखों को काट दिया है। मुझे नैतिकता विहिन धर्म स्वीकार नही है। जो धर्म इस लोक को नहीं सुधार सकता वह इह लोक को क्या सुधारेगा।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि दुरात्मा, सदात्मा, महात्मा ये तीन तरह के व्यक्ति होते हैं। जिनके मन में जो होता है वही वाणी में होता है और वहीं आचरण में होता है वह महात्मा होते हैं। और दुरात्मा व्यक्ति के कथनी और करनी में अन्तर होता है। विद्या को विवाद बढ़ाने में लगाने वाला दुरात्मा और उसी विद्या से संवाद स्थापित करने वाला महात्मा होता है। इस मौके पर साध्वी विनम्र प्रज्ञा ने कविता प्रस्तुत की। कलकत्ता हाईकोर्ट के एडवोकेट एल.सी.बिहानी ने अणुव्रत को विज्ञान करार देते हुए विश्वयापी बनाना जरुरी बताया । भोजराज बैद ने बिहानी का परिचय प्रस्तुत किया। आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति के संरक्षक बनेचंद मालू एवं मुख्या परामर्शक कन्हैयालाल छाजेड़ ने साहित्य के द्वारा विज्ञानी का सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन पन्नालाल पुगलिया ने किया।

क्रमश : 2

आचार्य महाप्रज्ञ ने की अवशिष्ठ चातुर्मासों की घोषणा

आचार्य माहप्रज्ञ ने मर्यादा महोत्सव में अवशिष्ठ रहे चातुर्मासों की आज घोषणा की। उन्होनें मुनि विमल कुमार को गंगानगर अंचल की ओर, मुनि सुरेश कुमार को आसींद, मुनि जिनेश कुमार को बैंगलोर, मुनि धर्मेश कुमार को चैन्नई, मुनि वत्सराज को कालू, मुनि विजयराज को राजगढ़ (सादुलपुर), मुनि मोहनलाल को राज में, साध्वी हुलासांजी को गंगानगर अंचल की ओर, साध्वी विद्यावती द्वितीय को कोटा, साध्वी कानकुमारी सरदारशहर को नाथद्वारा, साध्वी भीखांजी लाडनूं को शिवांसी मालाणी की ओर, साध्वी लक्ष्मी कुमारी को देवगढ़, साध्वी उज्जवल रेखा को तारानगर, साध्वी संगीतश्री जी को शाहदा (महराष्ट्र), साध्वी कीर्तिलता को कॉम्बटूर, साध्वी यशोमति को उत्तरकर्नाटकर की ओर, साध्वी नगीना को टाटगढ़, साध्वी विशदप्रभा को अजमेर संभाग की ओर, साध्वी सत्यप्रभा को हैदराबाद, साध्वी रतनश्री को सरदारपुरा, साध्वी कमलप्रभा को जोधपुर शहर, साध्वी जयप्रभा को भीलवाड़ा, साध्वी फूलकुमारी को लाडनूं को आमेट, साध्वी गुलाबकुमारी को टापरा, साध्वी भाग्यवति श्रीडूँगरगढ़ को आदमपुर मण्डी, समणी रथित प्रज्ञा को कठिहार बिहार, समणी निर्माण प्रज्ञा को वणी, समणी परमप्रज्ञा को सिलीगुड़ी, समणी मल्लिप्रज्ञा को चिकबैंगलूर, समणी जयंतप्रज्ञा को कटक, समणी विनीतप्रज्ञा को भटींडा, समणी कांतिप्रज्ञा को जावद, समणी प्रतीभाप्रज्ञा को टमकोर, समणी शीलप्रज्ञा को बीड़, समणी ज्ञानप्रज्ञा को कानपुर, समणी ज्योतिप्रज्ञा को गांधीधाम, समणी परिमलप्रज्ञा को नवसारी, समणी शारदाप्रज्ञा को मदुरै, समणी भावितप्रज्ञा को भायंदर, समणी मलयप्रज्ञा को राउलकेला में अपने चातुर्मासिक काल को सम्पादित करने का निर्देश दिया ।

एस रघुनाथ को मिलेगा अणुव्रत पुरस्कार

नैतिकता, अहिंसा, मानवीय मूल्यों की स्थापना और समाज के क्षेत्र में किये गये उल्लेखनीय कार्यो के लिए प्रतिवर्ष दिया जाने वाला अणुव्रत पूरस्कार दिल्ली मुख्यमंत्री के पूर्व मुख्य सचिव एस.रघुनाथन को दिया जायेगा। पुरस्कार स्वरुप जय तुलसी फाऊडेशन के द्वारा 1 लाख 51 हजार रुपये का, प्रशस्ति पत्र पुरस्कार साहित्य आदि प्रदान किये जाते हैं। अणुव्रत पुरस्कार के लिए एस.रघुनाथन के चयन की घोषणा करते हुए तेरापंथ विकास परिषद् के संयोजक लालचंद सिंघी ने बताया कि एस. रघुनाथन ने अणुव्रत के क्षेत्र में बहुत व्यापक काम किया है। श्रीमति रघुनाथन भी अणुव्रत से जुड़ी हुई है और विश्वविद्यालय की कुलपति रह चुकी है।

सादर प्रकाशनार्थ : –

तुलसीराम चौरड़िया
मीडिया संयोजक